पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 81-87

शांति बाइदेउ : यादों के झरोखे से

✍ डॉ. रीतामणि वैश्य

डॉ. शांति थापा(1961ई.-2021ई.)

जीवन से किसी के जाने की पीड़ा का अनुभव उसे ही होता है, जो उस पीड़ा से गुजरा हुआ होता है। मनुष्य दूसरों की पीड़ा का अनुमान लगा सकता है,पर अनुभव तो अपनी पीड़ा का ही कर सकता है। हरेक दिन हम सैकड़ों बार 'नहीं' शब्द का प्रयोग करते हैं,पर अपने सगे किसी मनुष्य के संदर्भ में यह 'नहीं' शब्द बहुत ही दर्दनाक होता है।

'रीता, खबर मिली क्या? शांति बाइदेउ नहीं रहीं।'

मालविका शर्मा दी के मोबाइल से आयी इसी एक बात से मेरे पैरों तले जमीन खिसक गयी। मेरी जबान बन्द हो गयी थी। वे कहती गयीं-'मैं अभी उनके घर के लिए निकली हूँ। वहाँ से भूतनाथ चलूँगी।'

मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। मैंने घड़ी देखी। दोपहर का समय था, 1.30 बजे थे। उस समय मैं यूनिवर्सिटी के किसी अत्यंत जरूरी काम में व्यस्त थी। उस समय काम को अधूरा छोड़कर जाना मुश्किल था और काम के बाद जाने का कोई मतलब नहीं रहता; क्योंकि तब

तक अंतिम संस्कार का सारा काम समाप्त हो चुका होता। शांति बाइदेउ के वियोग से मेरे मन में बहुत दुख हुआ और साथ ही शांति बाइदेउ पर एक अभिमान की भावना ने मेरे मन को घेर लिया। आखिर क्यों, क्यों उन्होंने मुझे उनसे एक बार मिलने का मौका नहीं दिया!

शांति बाइदेउ, डॉ. शांति थापा, पूर्वोत्तर भारत के हिन्दी और नेपाली साहित्य की नीरव साधिका। कभी किसी से कुछ भी अपेक्षा न रखने वाली शांति बाइदेउ केवल देना जानती थीं। शांति बाइदेउ गौहाटी के राधा गोविंद बरुवा महाविद्यालय में हिन्दी की सहयोगी आचार्या एवं विभागाध्यक्षा थीं। ऐसे तो उन्हें मैं बहुत पहले से जानती थी। वे जब गौहाटी विश्वविद्यालय में एम. ए. की पढ़ाई कर रही थीं, तभी से हमारे घर के साथ उनका आना-जाना होता था। पर तब मैं दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाली एक छोटी सी लड़की थी। चुपके से पर्दे की ओट से उन्हें झाँकना मुझे याद है। हमारे घर में उनकी काफी चर्चा होती थी।

फिर लंबे अंतराल के बाद जब मैं गौहाटी विश्वविद्यालय में आयी, तब उनसे संबंध बना। राधा गोविंद बरुवा महाविद्यालय की सहयोगी आचार्या डॉ॰ मालविका शर्मा दी के साथ किसी न किसी कारण से मेरा संपर्क होता ही रहता था। उनके साथ शांति बाइदेउ के बारे में मेरी बातें होती रहती थीं। मालविका दी से ही मुझे पता चला कि शांति बाइदेउ वर्षों से हिन्दी में कई महत्वपूर्ण काम करती आयी थीं। पर वे अपने को प्रचार से बाहर रखती थीं। अपने बारे में न किसी से कहती थीं और न ही बैठकों में मंच पर बैठकर गमछा लेते रहने की उनकी प्रवृत्ति थी। उनके काम करने की प्रतिभा और कला से मैं प्रभावित हुई और समय के साथ उनसे मेरा संबंध दृढ़ होता गया। पर यह समय बहुत कम था।

शांति बाइदेउ के साथ जितना भी समय रहने का अवसर मिला, मैंने पाया कि मातृभूमि और मातृभाषा - असम और नेपाली को लेकर उनके मन में सेवा की अदम्य इच्छा थी। इसी इच्छा की प्रेरणा से उन्होंने एकल प्रयास से 'लोहित घाटी की कहानियों' में 77 असमीया महिला कथाकारों की कहानियों के हिन्दी अनुवाद के संकलन का काम सम्पूर्ण किया था। इनमें से 14 कहानियों का अनुवाद उन्होंने स्वयं किया और शेष कहानियों के अनुवाद के लिए असम के विविध स्थलों से चुन-चुन कर अनुवादक निकाले थे। आपने विशिष्ट असमीया कथाकार अतुलानन्द गोस्वामी के 'नामघरीया' उपन्यास का नेपाली अनुवाद किया था। उनकी इस अनुवाद कृति के लिए उन्हें सन् 2002 में साहित्य अकादेमी का पुरस्कार से विभूषित किया गया था। इनके अलावा भी अनुवाद के क्षेत्र में उन्होंने और कई महत्वपूर्ण काम किये।

गौहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के साथ बाइदेउ का अत्यंत मधुर संबंध था। गौहाटी विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग प्राक्तन विद्यार्थी संघ की स्थापना में नेहू के अध्यापक दिनेश कुमार चौबे सर और तेजपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यापक अनंत नाथ सर के साथ उनकी भी महत्ती भूमिका रही। आप इस संघ से सक्रिय रूप से जुड़ी रहीं। आपने संघ की स्मारिका 'स्नेहिल' के दूसरे अंक के सम्पादन की जिम्मेदारी भी सफलतापूर्वक निभायी थी।

'स्नेहिल' के सम्पादन के समय बाइदेउ ने एक दिन मुझे फोन किया। फोन उठाते ही वे बोलीं- 'क्या कर रही हो?' मैंने कहा- 'खाना पका रही हूँ।'

'सब काम छोड़ दो। इन दिनों कहानी लिखो। 'स्नेहिल' के लिए दी मैंने तुम्हारी कहानी 'बंधन' पढ़ी। कहानी अच्छी है। कोई भी पशु प्रेमी को यह कहानी अच्छी लगेगी। कहानी में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी हैं। एक इसी विधा पर ध्यान रखोगी तो बहुत अच्छा होगा।' 'बंधन' मेरी प्रारम्भिक कहानियों में से है। बाइदेउ के इन्हीं शब्दों से कहानी लेखन के प्रति मेरी रुचि जगी।

बाइदेउ को विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आना बहुत पसंद आता था। जब भी उन्हें मौका मिला, वे जरूर आती थीं और जो भी जिम्मेदारी उन्हें दी जाती थी, वे पूरी निष्ठा से निभाती थीं। उन्होंने खुले आम कहा था- 'प्राक्तन विद्यार्थी संघ की स्थापना से अपने विभाग में आने का रास्ता खुला है। काम करती रहो। हमारा सहयोग सदा तुम्हें मिलता रहेगा।' जब-जब मैं कुछ नया करना चाहती थी, एक न एक बार निश्चित रूप से उनसे बात करती थी और वे मुझे हर संभव मदद और प्रेरणा देती थीं। गौहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की शोध-पत्रिका 'पूर्वोदय शोध मीमांसा' के सदस्य मण्डल की सदस्य के रूप में भी आपने अपना सहयोग दिया।

गौहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की स्थापना सन् 1970 हुई थी। कुछ सालों बाद यहाँ शोध भी होने लगा। पर हिन्दी विभाग के शोध-प्रबंध की भाषा अंग्रेजी थी। इस सिलसिले में मेरी उनसे बातें हुई थीं, तो उन्होंने हरेक संभव सहयोग देने का वचन दिया था। सन् 2018 में इस विभाग को हिन्दी में शोध-प्रबंध लिखने का प्रावधान दिया गया। इस सफलता से शांति बाइदेउ बहुत खुश थीं।

शांति बाइदेउ के मन में अपनी वृत्ति के प्रति अटूट श्रद्धा की भावना थी। बिन क्लास किये न तो वे रहती थीं और न दूसरों को रहने देती थीं। वे अपने महाविद्यालय में कर्म-संस्कृति की एक स्वस्थ परंपरा बना गयीं। एक बार उन्होंने अपने कॉलेज के हिन्दी दिवस में मुझे बुलाया था।

बहुत व्यवस्थित ढंग से कार्यक्रम किया गया था। उन्होंने कहा था- 'मैं विभाग के बाकी सदस्यों को क्या दे जाऊँगी, यही काम सीखा जायूँगी।' गौहाटी विश्वविद्यालय के दूर और मुक्त शिक्षा संस्थान (आइडॉल) में नेपाली पाठ्यक्रम खोलने का श्रेय शांति बाइदेउ को जाता है। पाठ्यक्रम की अध्ययन सामाग्री के लेखन की जिम्मेदारी मूलतः शांति बाइदेउ ने उठायी थी। इस काम में उन्होंने स्वयं को ऐसे समर्पित कर दिया था कि वे अपनी शारीरिक अवस्था की परवाह किए बिना महीनों तक घंटों लेखन-कार्य में लगी रहती थीं। उन्हें पता था कि यह काम वह अगर नहीं करती, तो कभी संभव नहीं होगा। आपके अथक श्रम के परिणाम स्वरूप आइडॉल में नेपाली विषय का शुभारंभ हुआ, पर इसी कारण से आप बुरी तरह से कमर दर्द की शिकार हो गयीं। पर कभी भी आपने इस पर अफसोस नहीं किया था।

शांति बाइदेउ अपने विद्यार्थियों की मदद करने के लिए भी जानी जाती थीं। वे अपने वर्तमान और प्राक्तन विद्यार्थियों को अपनी संतान की तरह स्नेह करती थीं। उनके लिए अनेक त्याग उन्होंने किये थे। उन्हें अपने श्रम पर भरोसा था। वे स्वयं श्रम करती थीं और विद्यार्थियों को श्रम करना सिखाती थीं। एक बार उन्होंने कहा था- 'जिन लोगों को जीवन में आसानी से सबकुछ मिल जाता है, वे श्रम का मूल्य नहीं समझ पाते। यह उन दिनों की बात है, जब हम जब एम. ए. पढ़ रहे थे। एक दिन हम सब एक साथ लाइब्रेरी में गये। हम किताब खोजने में व्यस्त थे कि हमारे साथ के एक लड़के ने झट से किसी किताब के बीच के कुछ पन्ने फाड़ कर जेकेट के जेब में डाल दिये। मैं दंग रह गयी। मैंने कहा- भैया यह आप क्या कर रहे हैं? यह किताब किस काम आयेगी बाकी सबके लिए? उन्होंने इशारे कहा- सुसुसुप। इतना महान बनने की जरूरत नहीं है।.... ऐसे लोगों के हाथों में व्यवस्था संभालने की जिम्मेदारी आती है, तो तुम समझ सकती हो, क्या हो सकता है। वह घटना आज भी मेरी आँखों के सामने से गुजर जाती है।'

गौहाटी विश्वविद्यालय के अन्य कामों से शांति बाइदेउ जुड़ी हुई थीं। एकदिन मैं भी उनके साथ काम कर रही थी। इतने में उनका मोबाइल फोन बज उठा। बाइदेउ के चेहरे में हँसी खिल गयी। कहा-'आइ ओ,जानमणि का फोन है। हैलो जानमणि ! तुम खाना खा लेना। मैं अभी निकल नहीं पायूँगी। ठीक है?' मेरे मन में स्वाभाविक रूप से कई सवाल खड़े हुए। आखिर यह जानमणि हैं कौन? कहीं ..... । मेरी चिंतन प्रक्रिया में बाधा डालती हुई वे बोलीं- 'मेरी जानमणि का फोन था... मेरी माँ का।'

शांति बाइदेउ बहुत ही सुंदरी थीं, पर उन्होंने शादी नहीं की। एक दिन मैंने उन्हें पूछ दिया- 'बाइदेउ, एक बात पूछती हूँ, अगर आप बुरा न माने तो...'

'पूछो।'

'आपने क्यों शादी नहीं की?'

'जिससे प्रेम था, उससे शादी नहीं हो पायी, तो शादी क्यों करती?'

फिर वे बोलती गयीं। एम. ए. पढ़ने के दौरान उनकी शादी किसी से तय हुई थी। लड़के को बाइदेउ का मुक्त स्वभाव पसंद नहीं आता था। बाइदेउ एक संस्कृति प्रेमी हृदय की अधिकारिणी थीं। वे घंटों अपने साथियों के साथ नाटक के अभ्यास में लगी रहती थीं, जिसे वह नापसंद करता था। उसका मानना था कि दुष्ट चरित्र की लड़कियाँ ही लड़कों साथ नाटक करती हुई रात-रात घूमती फिरती हैं। बाइदेउ कविता लिखती थीं और अपने बेग में डायरी में रख देती थीं। लड़का बेग में डायरी निकालकर अधूरी कविता को पूरा कर फिर से चुपचाप डायरी बेग में रख देता था। बाइदेउ के मना करने पर भी यह सिलसिला चलता रहा। बाइदेउ को उसमें तमीज का अभाव दिखा और बाइदेउ यह कहती हुई कि उसे बाइदेउ जैसी दुष्ट चरित्र की लड़की से शादी न करके किसी संस्कारी लड़की से शादी करनी चाहिए, उससे संबंध तोड़ दिया था। बाइदेउ ने अपने प्यार के बारे में बताया कि जिनसे उनका प्रेम था, वे भी नेपाली संप्रदाय के थे। नेपाली लोगों में शादी जल्दी होती है। बाइदेउ पढ़ने में, नाटक करने में और घर की जिम्मेदारी संभालने में अपने परिवार को साकार नहीं कर पा रही थीं। एक दिन अचानक से बाइदेउ ने सुना कि उनके प्यार ने शादी कर ली है। बाद में मुझे पता चला कि उन्होंने बाइदेउ से बार-बार शादी के लिए कहा था। पर बाइदेउ को अपने घर को संभालने से फुर्सत नहीं मिली। शादी कर अगर वे चली गयी, तो माँ और भाई का क्या होगा, इसी सोच से उन्होंने अपनी शादी का खयाल ही नहीं किया। पर उन्होंने इस महान त्याग के बारे में अपने मुँह से कभी कुछ नहीं कहा था। इस बात की जानकारी मुझे भी दूसरों से मिली।

'नदी के द्वीप' में अज्ञेय ने कहा है- यायावरों का भी समाज होता है। ऐसे ही अविवाहितों का भी संसार होता है और इस संसार की परिधि विवाहितों से बड़ी व्यापक होती है। बाइदेउ के निजी संसार में एक बिल्ली, कुत्ते ,ढेर सारे कौवे, गौरैये और अन्य पक्षी होते थे। सुबह चार बजे पक्षियों के कलरव से उन्हें बिस्तर छोड़ना पड़ता था। किसी कारण से उठने में देर होने से उनके संसार के सदस्य अधीर हो जाते थे। बाइदेउ हर दिन इनके लिए खिचड़ी

पकाती थीं। खिचड़ी खाकर सारे पशु-पक्षी वहाँ से निकलते थे। उन्हें प्रातः भोजन कराने काम वे पूरी निष्ठा से करती आ रही थीं। घर की बिल्ली और बाइदेउ एक दूसरे की जान थी। बाइदेउ की माँ जब बीमार पड़ी थीं, तो बाइदेउ बिल्ली से यह कहती हुई कॉलेज जाती थीं – 'मेरे आने से पहले तू यहाँ से बिलकुल मत हिलाता। माँ को तेरे हवाले छोड़े जा रही हूँ। और बिल्ली भी एकाग्र चित्त से बाइदेउ के आदेश का अनुपालन करती। बाइदेउ के कॉलेज से घर पहुँचने के बाद ही वह वहाँ से बाहर जाती थी। पेशाब पाखाना के लिए भी वह बाहर नहीं जाती थी। बाइदेउ जब बीमार पड़ी थीं, तब भी उसने यही किया था। सोचती हूँ तो बड़ा दुख होता है कि इस बिल्ली का और बाकी पशु पक्षियों की दशा बाइदेउ के अभाव में क्या हुई होगी !

बाइदेउ के जीवन में दो चीजें बहुत महत्व रखती थीं- एक उनकी माँ और दूसरी उनका कॉलेज। माँ के साथ उनका बहुत लगाव था। माँ के निधन के बाद वे टूट चुकी थीं। उसके दो-तीन साल बाद 2020 के 31 अक्तूबर को उन्हें सेवा निवृत्ति भी मिली। इन दोनों से मुक्त होने के बाद शायद उन्हें जीने का कोई मकसद नहीं दिखाई दिया होगा। वे पहले से ही अपने स्वास्थ्य को लेकर गंभीर नहीं थीं। अवसर के बाद तो वे मानो और उदासीन होती गयीं। मुझे पता था कि वे बीमार हैं। बाद में वे फोन नहीं उठाती थीं और मैं मालविका दी से उनके स्वास्थ्य की जानकारी लिया करती थी। मैं उनसे मिलने जाना चाहती थीं, कई बार। मालविका दी ने कहा कि उनकी हालत कुछ ठीक नहीं है, उन्हें पेशाव-बेशाब का ध्यान नहीं रहता। मेरे पति के साथ वे असहज अनुभव करेंगी। तो मालविका दी के साथ शांति बाइदेउ से मिलने जाना तय हुआ था। पर वह दिन कभी नहीं आया।

शांति बाइदेउ से अंतिम बार मेरा संपर्क व्हात्सप्प के जरिये 20 जून, 2020 हुआ था, जब उन्हें गीता उपाध्याय सेतुबंधन पुरस्कार के लिए चुना गया था। मैंने उन्हें अभिनंदन दिया तो उन्होंने लिखा था- 'Thank you Dr Ritamoni'. फिर लिखा कमर का बड़ा दर्द हो रहा है।' मैंने खयाल रखने के लिए कहा, उन्होंने 'Thanx' लिखा। फिर 15 जुलाई, 2020 को मैंने उन्हें लिखा – 'आपको हमारे और हिन्दी के लिए जल्दी स्वस्थ होना है। You are our strength.' बाइदेउ ने वे मेसेज खोलके भी नहीं देखे। 2021 के अपने जन्म तिथि के दिन यानी 9 जनवरी को ही वे स्वर्ग सिधारीं।

बाइदेउ ने मुझसे कुछ किताबें मांगी थीं। लगभग दो साल पहले एक लड़के को मैंने यह काम सौंपा था और बाइदेउ तक वे किताबें नहीं पहुँचीं। किताब भेजने के बाद भी मैं कई बार

बाइदेउ से मिली थी, पर लड़का किताब उन तक पहुँचाने की जिम्मेदारी खुद निभाना चाहकर उन्हें सँजोकर रखा हुआ था। बाइदेउ ने कहा और मैं न कर पायी, मुझे इसका दुख होता है। पर एक अभिमान की भावना भी मेरे मन में है कि उन्होंने मुझे मिलने का मौका नहीं दिया। वे ठीकठाक थीं, ऐसे अचानक चली जायेगी इसका अंदाजा नहीं लगा पायी। मैं जीते जी बाइदेउ का हँसता हुआ चेहरा नहीं देख पायी, तो उनके शांत चेहरे को देखने की आकांक्षा भी नहीं रही। उस दिन मैं व्यस्त थी, सही है; पर अगर चाहती तो जरूर जा सकती थी। मैं अपने मन में उनके खिलते हुए चेहरे को याद रखना चाहती थी, न कि आग की लपटों में समर्पित उनके बेजान शरीर को।

जीवन बहता नीर है। वह कभी नहीं रुकता,बस चले चलता है। उसकी अपनी गति होती है,अपनी लय होती है। वह न आगे देखता है, न पीछे। जीवन की इन्हीं नीतियों के चलते शांति बाइदेउ भी चली गयीं। कहते हैं, एक जाता है तो हजारों आते हैं। सही है, पर यह भी उतना ही सही है कि जानेवाले उस एक का स्थान कोई नहीं ले सकता, वह स्थान स्थायी रूप से रिक्त होता है। शांति बाइदेउ, मैं भगवान पर उतना भरोसा नहीं रखती, जीव-ब्रह्मा, आत्मा-परमात्मा के दर्शन मुझे उतने प्रभावित नहीं करते। मेरे लिए तो आत्मा चेतना है। पर आपके खातिर मैं यह मानना चाहती हूँ कि आत्मा चेतना से परे है,मृत्यु के बाद भी आत्मा का अस्तित्व होता है। वह अपने चाहने वालों के इर्द-गिर्द रहती है। अक्सर हमें आपकी कमी खलती है। आप जहाँ भी रहें, सुखी रहें। नमन।

शांति बाइदेउ ! अगर आप होती,तो और बहुत कुछ होता।

संपर्क सूत्र :
सहयोगी अध्यापक
हिन्दी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय
ई-मेल : ritamonibaishya841@gmail.com